शिवोपासक खण्ड

भगवान् राम की शिवभक्ति

भगवान् राम की शिवभक्ति के अनेक प्रसंग विविध ग्रन्थों में मिलते हैं। यहाँ पर हम कुछ प्रसंगों को दे रहे हैं जो पद्मपुराण तथा ब्रह्मपुराण से लिये गये हैं। इन प्रसंगों के अलावा स्कंदपुराण के आवन्त्यखण्ड के आवन्त्यक्षेत्र माहात्म्य के अन्तर्गत भी रामजी द्वारा उज्जैन में महाकाल की पूजा तथा अपने नाम पर लिंग स्थापित करने का उल्लेख है। उज्जैन के रामेश्वर तीर्थ में स्नान कर रामेश्वरलिंग की पूजा करनेवाला सब पापों से मुक्त हो विष्णुलोक को जाता है।

पूर्वकाल में श्रीरामचन्द्रजी जब सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट से चलकर महर्षि अत्रि के आश्रम पर पहुँचे, तब वहाँ पर अत्रि मुनि ने श्रीराम के पूछने पर बताया कि ब्रह्माजी के द्वारा निर्मित उत्तम तीर्थ पुष्कर नाम से विख्यात है। यह दो प्रसिद्ध पर्वतों, मर्यादा एवं यज्ञ, के बीच स्थित है। अत्रि मुनि ने श्रीराम से कहा कि वहाँ जाकर अपने पिता दशरथ को तुम पिण्डदान से तृप्त करो। पिण्डदान के पश्चात् श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीता पुष्कर क्षेत्र की सीमा मर्यादा – पर्वत के पास जा पहुँचे। वहाँ देवताओं के स्वामी पिनाकधारी देवदेव महादेवजी का स्थान था। वे वहाँ अजगन्ध के नाम से प्रसिद्ध थे। श्रीरामचन्द्रजी ने वहाँ जाकर त्रिनेत्रधारी भगवान् उमानाथ को साष्टाङ्ग प्रणाम किया। उनके दर्शन से श्रीरघुनाथजी के श्रीविग्रह में रोमाञ्च हो आया। वे सात्त्विक भाव में स्थित हो गये। उन्होंने देवेश्वर भगवान् श्रीशिव को ही जगत् का कारण समझा और विनम्रभाव से स्थित हो उनकी स्तुति करने लगे।

श्रीरामचन्द्रजी बोले –

कृत्स्नस्य योऽस्य जगतः सचराचरस्य कर्ता कृतस्य च तथा सुखदुःखहेतुः।
संहारहेतुरपि यः पुनरन्तकाले तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जो चराचर प्रणियोंसहित इस सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न करनेवाले हैं, उत्पन्न हुए जगत् के सुख – दुःख में एकमात्र कारण हैं तथा अन्तकाल में जो पुनः इस विश्व के संहार में भी कारण बनते हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

यं योगिनो विगतमोहतमोरजस्का भक्त्यैकतानमनसो विनिवृत्तकामाः।
ध्यायन्ति निश्चलधियोऽमितदिव्यभावं तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिनके हृदय से मोह, तमोगुण और रजोगुण दूर हो गये हैं, भक्ति के प्रभाव से जिनका चित्त भगवान् के ध्यान में लीन हो रहा है, जिनकी सम्पूर्ण कामनाएँ निवृत्त हो चुकी हैं और जिनकी बुद्धि स्थिर हो गयी है, ऐसे योगी पुरुष अपरिमेय दिव्यभाव से सम्पन्न जिन भगवान् शिव का निरन्तर ध्यान करते रहते हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

यश्चेन्दुखण्डममलं विलसन्मयूखं बद्ध्वा सदा प्रियतमां शिरसा बिभर्ति।
यश्चार्द्धदेहमददाद् गिरिराजपुत्र्यै तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जो सुन्दर किरणों से युक्त निर्मल चन्द्रमा की कला को जटाजूट में बाँधकर अपनी प्रियतमा

गंगाजी को मस्तक पर धारण करते हैं, जिन्होंने गिरिराजकुमारी उमा को अपना आधा शरीर दे दिया है, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

योऽयं सकृद्विमलचारुविलोलतोयां गङ्गां महोर्मिविषमां गगनात् पतन्तीम्।
मूर्ध्नाऽऽददे स्रजमिव प्रतिलोलपुष्पां तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

आकाश से गिरती हुई गंगा को, जो स्वच्छ, सुन्दर एवं चञ्चल जलराशि से युक्त तथा ऊँची-ऊँची लहरों से उल्लसित होने के कारण भयङ्कर जान पड़ती थीं, जिन्होंने हिलते हुए फूलों से सुशोभित माला की भाँति सहसा अपने मस्तक पर धारण कर लिया, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

कैलासशैलशिखरं प्रतिकम्प्यमानं कैलासशृङ्गसदृशेन दशाननेन।
यः पादपद्मपरिवादनमादधानस्तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

कैलास पर्वत के शिखर के समान ऊँचे शरीरवाले दशमुख रावण के द्वारा हिलायी जाती हुई कैलास गिरि की चोटी को जिन्होंने अपने चरणकमलों से ताल देकर स्थिर कर दिया, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

येनासकृद् दितिसुताः समरे निरस्ता विद्याधरोरगगणाश्च वरैः समग्राः।
संयोजिता मुनिवराः फलमूलभक्षास्तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिन्होंने अनेकों बार दैत्यों को युद्ध में परास्त किया है और विद्याधर, नागगण तथा फल-मूल का आहार करनेवाले सम्पूर्ण मुनिवरों को उत्तम वर दिये हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

दग्ध्वाध्वरं च नयने च तथा भगस्य पूष्णस्तथा दशनपङ्क्तिमपातयच्च।
तस्तम्भ यः कुलिशयुक्तमहेन्द्रहस्तं तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिन्होंने दक्ष का यज्ञ भस्म करके भग देवता की आँखें फोड़ डालीं और पूषा के सारे दाँत गिरा दिये तथा वज्रसहित देवराज इन्द्र के हाथ को भी स्तम्भित कर दिया-जड़वत् निश्चेष्ट बना दिया, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

एनस्कृतोऽपि विषयेष्वपि सक्तभावा ज्ञानान्वयश्रुतगुणैरपि नैव युक्ताः।
यं संश्रिताः सुखभुजः पुरुषा भवन्ति तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जो पापकर्म में निरत और विषयासक्त हैं, जिनमें उत्तम ज्ञान, उत्तम कुल, उत्तम शास्त्र-ज्ञान और उत्तम गुणों का भी अभाव है-ऐसे पुरुष भी जिनकी शरण में जाने से सुखी हो जाते हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

अत्रिप्रसूतिरविकोटिसमानतेजाः संत्रासनं विबुधदानवसत्तमानाम्।
यः कालकूटमपिबत् समुदीर्णवेगं तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जो तेज में करोड़ों चन्द्रमाओं और सूर्यों के समान हैं, जिन्होंने बड़े-बड़े देवताओं तथा दानवों का भी दिल दहला देनेवाले कालकूट नामक भयङ्कर विष का पान कर लिया था, उन प्रचण्ड वेगशाली

शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुतां च सषण्मुखानां योऽदाद् वरांश्च बहुशो भगवान् महेशः।
नन्दिं च मृत्युवदनात् पुनरुज्जहार तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिन भगवान् महेश्वर ने कार्त्तिकेय के सहित ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र तथा मरुद्गणों को अनेकों बार वर दिये हैं तथा नन्दी का मृत्यु के मुख से उद्धार किया, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

आराधितः सुतपसा हिमवन्निकुञ्जे धूम्रव्रतेन मनसापि परैरगम्यः।
सञ्जीवनीं समददाद् भृगवे महात्मा तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जो दूसरों के लिये मन से भी अगम्य हैं, महर्षि भृगु ने हिमालय पर्वत के निकुञ्ज में होम का धुआँ पीकर कठोर तपस्या के द्वारा जिनकी आराधना की थी तथा जिन महात्मा ने भृगु को (उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर) सञ्जीवनी विद्या प्रदान की, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

नानाविधैर्गजबिडालसमानवक्त्रैर्दक्षाध्वरप्रमथनैर्बलिभिर्गणौघैः।
योऽभ्यर्च्यतेऽमरगणैश्च सलोकपालैस्तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

हाथी और बिल्ली आदि की – सी मुखाकृतिवाले तथा दक्ष – यज्ञ का विनाश करनेवाले नाना प्रकार के महाबली गणों द्वारा जिनकी निरन्तर पूजा होती रहती है तथा लोकपालोंसहित देवगण भी जिनकी आराधना किया करते हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

क्रीडार्थमेव भगवान् भुवनानि सप्त नानानदीविहगपादपमण्डितानि।
सब्रह्मकानि व्यसृजत् सुकृताहितानि तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिन भगवान् ने अपनी क्रीड़ा के लिये ही अनेकों नदियों, पक्षियों और वृक्षों से सुशोभित एवं ब्रह्माजी से अधिष्ठित सातों भुवनों की रचना की है तथा जिन्होंने सम्पूर्ण लोकों को अपने पुण्य पर ही प्रतिष्ठित किया है, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

यस्याखिलं जगदिदं वशवर्त्ति नित्यं योऽष्टाभिरेव तनुभिर्भुवनानि भुङ्क्ते।
यः कारणं सुमहतामपि कारणानां तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

यह सम्पूर्ण विश्व सदा ही जिनकी आज्ञा के अधीन है, जो (जल, अग्नि, यजमान, सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु और प्रकृति – इन) आठ विग्रहों से समस्त लोकों का उपभोग करते हैं तथा जो बड़े – से – बड़े कारण – तत्त्वों के भी महाकारण हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

शङ्खेन्दुकुन्दधवलं वृषभप्रवीरमारुह्य यः क्षितिधरेन्द्रसुतानुयातः।
यात्यम्बरे हिमविभूतिविभूषिताङ्गस्तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जो अपने श्रीविग्रह को हिम और भस्म से विभूषित करके शङ्ख, चन्द्रमा और कुन्द के समान श्वेत वर्णवाले वृषभ – श्रेष्ठ नन्दी पर सवार होकर गिरिराजकिशोरी उमा के साथ आकाश में विचरते हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

शान्तं मुनिं यमनियोगपरायणं तैर्भीमैर्यमस्य पुरुषैः प्रतिनीयमानम्।
भक्त्या नतं स्तुतिपरं प्रसभं ररक्ष तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

यमराज की आज्ञा के पालन में लगे रहने पर भी जिन्हें वे भयंकर यमदूत पकड़कर लिये जा रहे थे तथा जो भक्ति से नम्र होकर स्तुति कर रहे थे, उन शान्त मुनि की जिन्होंने बलपूर्वक यमदूतों से रक्षा की, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

यः सव्यपाणिकमलाग्रनखेन देवस्तत् पञ्चमं प्रसभमेव पुरः सुराणाम्।
ब्राह्मं शिरस्तरुणपद्मनिभं चकर्त तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिन्होंने समस्त देवताओं के सामने ही ब्रह्माजी के उस पाँचवें मस्तक को, जो नवीन कमल के समान शोभा पा रहा था, अपने बायें हाथ के नख से बलपूर्वक काट डाला था, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

यस्य प्रणम्य चरणौ वरदस्य भक्त्या स्तुत्वा च वाग्भिरमलाभिरतन्द्रिताभिः।
दीप्तैस्तमांसि नुदते स्वकरैर्विवस्वांस्तं शङ्करं शरणदं शरणं व्रजामि।।

जिन वरदायक भगवान् के चरणों में भक्तिपूर्वक प्रणाम करके तथा आलस्यरहित निर्मल वाणी के द्वारा जिनकी स्तुति करके सूर्यदेव अपनी उद्दीप्त किरणों से जगत् का अन्धकार दूर करते हैं, उन शरणदाता भगवान् श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूँ।

ये त्वां सुरोत्तम गुरुं पुरुषा विमूढा जानन्ति नास्य जगतः सचराचरस्य।
ऐश्वर्यमाननिगमानुशयेन पश्चात्ते यातनां त्वनुभवन्त्यविशुद्धचित्ताः।।

देवश्रेष्ठ! जो मलिनहृदय मूढ़ पुरुष ऐश्वर्य, मान – प्रतिष्ठा तथा वेदविद्या के अभिमान के कारण आपको इस चराचर जगत् का गुरु नहीं जानते, वे मृत्यु के पश्चात् नरक की यातना भोगते हैं।

श्रीरघुनाथजी के इस प्रकार स्तुति करने पर हाथ में त्रिशूल धारण करनेवाले वृषभध्वज भगवान् श्रीशंकर ने सन्तुष्ट हो हर्ष में भरकर कहा – 'रघुनन्दन! आपका कल्याण हो। मैं आपके ऊपर बहुत सन्तुष्ट हूँ। आपने विमल वंश में अवतार लिया है। आप जगत् के वन्दनीय हैं। मानव – शरीर में प्रकट होने पर भी वास्तव में आप देवस्वरूप हैं। आप – जैसे रक्षक के द्वारा सुरक्षित हो देवता अनन्त वर्षोंतक सुखी रहेंगे। चिरकालतक उनकी वृद्धि होती रहेगी। चौदहवाँ वर्ष बीतने पर जब आप अयोध्या को लौट जायँगे, उस समय इस पृथ्वी पर रहनेवाले जो – जो मनुष्य आपका दर्शन करेंगे, वे सभी सुखी होंगे तथा उन्हें अक्षय स्वर्ग का निवास प्राप्त होगा। अतः आप देवताओं का महान् कार्य करके पुनः अयोध्यापुरी को लौट जाइये। (पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड अ. 33/152 – 166)

श्रीराम की शिवोपासनासंबंधी दूसरा प्रमुख प्रसंग इस प्रकार है। श्रीराम वनवास के लिये दीक्षित हो लक्ष्मण और सीता के साथ चलते – चलते चित्रकूट में आये। वहीं उन्होंने तीन वर्ष व्यतीत किये। फिर वहाँ से दक्षिण दिशा की ओर चलकर वे क्रमशः दण्डकारण्य में पहुँचे, जो समस्त देशों में पवित्र

और तीनों लोकों में विख्यात है। वह महान् वन दैत्यों से सेवित होने के कारण बड़ा भयंकर था। ऋषियों ने भयभीत होकर उसे छोड़ दिया था। श्रीराम ने वहाँ दैत्यों और राक्षसों को मारकर दण्डकवन को ऋषि-मुनियों के रहने योग्य बना दिया। फिर पाँच योजन आगे जाकर वे धीरे-धीरे गौतमी के तट पर पहुँचे। भगवान् शिव की जो पुञ्जीभूत एवं अनिर्वचनीय पराशक्ति है, वही जलस्वरूप में प्रकट हुई गौतमी (गोदावरी) नदी है-ऐसा संत महात्माओं का कथन है।

वहाँ पहुँचकर श्रीराम बोले-अहो, (गौतमी)गङ्गा का कैसा अद्भुत प्रभाव है। तीनों लोकों में इसकी कहीं उपमा नहीं है। हम धन्य हैं कि इस त्रिभुवनपावनी गङ्गा का दर्शन पा सके।

यों कहकर श्रीराम ने बड़े हर्ष के साथ महादेवजी की स्थापना की और यत्नपूर्वक षोडशोपचार से छत्तीस कलाओंवाले महादेवजी की आवरणसहित पूजा कर हाथ जोड़ उनकी स्तुति करने लगे।

श्रीराम बोले-मैं पुराणपुरुष शम्भु को नमस्कार करता हूँ। जिनकी असीम सत्ता का कहीं पार या अन्त नहीं है, उन सर्वज्ञ शिव को मैं प्रणाम करता हूँ। अविनाशी प्रभु रुद्र को नमस्कार करता हूँ। सबका संहार करनेवाले शर्व को मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। अविनाशी परमदेव को नमस्कार करता हूँ। लोकगुरु उमापति को प्रणाम करता हूँ। दरिद्रता का विनाश करनेवाले शिव को नमस्कार करता हूँ। रोगों का अपहरण करनेवाले महेश्वर को प्रणाम करता हूँ। जिनका रूप चिन्तन का विषय नहीं है, उन कल्याणमय शिव को नमस्कार करता हूँ। विश्व की उत्पत्ति के बीजभूत भगवान् भव को प्रणाम करता हूँ। जगत् का पालन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार करता हूँ। संहारकारी रुद्र को बारंबार प्रणाम करता हूँ। पार्वतीजी के प्रियतम अविनाशी प्रभु को नमस्कार करता हूँ। नित्य, क्षर-अक्षरस्वरूप शंकर को प्रणाम करता हूँ। जिनका स्वरूप चिन्मय है और अप्रमेय है, उन भगवान् त्रिलोचन को मैं मस्तक झुकाकर बारंबार नमस्कार करता हूँ। करुणा करनेवाले भगवान् शिव को प्रणाम करता हूँ तथा संसार को भय देनेवाले भगवान् भूतनाथ को सर्वदा नमस्कार करता हूँ। मनोवाञ्छित फलों के दाता महेश्वर को प्रणाम करता हूँ। भगवती उमा के स्वामी श्रीसोमनाथ को नमस्कार करता हूँ। तीनों वेद जिनके तीन नेत्र हैं, उन त्रिलोचन को प्रणाम करता हूँ। त्रिविधि मूर्ति से रहित सदाशिव को नमस्कार करता हूँ। पुण्यमय शिव को प्रणाम करता हूँ। सत्-असत् से पृथक् परमात्मा को नमस्कार करता हूँ। पापों का अपहरण करनेवाले भगवान् हर को प्रणाम करता हूँ। जो सम्पूर्ण विश्व के हित में लगे रहते हैं, उन भगवान् को नमस्कार करता हूँ। जो बहुत-से रूप धारण करते हैं, उन भगवान् शंकर को प्रणाम करता हूँ। जो संसार के रक्षक तथा सत् और असत् के निर्माता हैं, उन्हें नमस्कार करता हूँ। जो सम्पूर्ण विश्व के स्वामी हैं, उन विश्वनाथ को प्रणाम करता हूँ। हव्य-कव्यस्वरूप यज्ञेश्वर को नमस्कार करता हूँ। सम्पूर्ण लोकों का सर्वदा कल्याण करनेवाले जो भगवान् शिव आराधना करने पर उत्तम गति एवं सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुएँ प्रदान करते हैं, उन दानप्रिय इष्टदेव को मैं नमस्कार करता हूँ। भगवान् सोमनाथ को प्रणाम करता हूँ। जो स्वतन्त्र न रहकर भक्तों के पराधीन रहते हैं, उन विजयशील उमानाथ को मैं नमस्कार करता हूँ। विघ्नराज

गणेश तथा नन्दी के स्वामी पुत्रप्रिय भगवान् शिव को मैं मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ। संसार के दुःख और शोक का नाश करनेवाले देवता भगवान् चन्द्रशेखर को मैं बारंबार नमस्कार करता हूँ। जो स्तुति करने योग्य और मस्तक पर गङ्गा को धारण करनेवाले हैं, उन महेश्वर को नमस्कार करता हूँ। देवताओं में श्रेष्ठ उमापति को प्रणाम करता हूँ। ब्रह्मा आदि ईश्वर, इन्द्र आदि देवता तथा असुर भी जिनके चरण-कमलों की पूजा करते हैं, उन भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ। जिन्होंने पार्वतीदेवी के मुख से निकलनेवाले वचनों पर दृष्टिपात करने के लिये मानो तीन नेत्र धारण कर रक्खे हैं, उन भगवान् को प्रणाम करता हूँ। पञ्चामृत, चन्दन, उत्तम धूप, दीप, भाँति-भाँति के विचित्र पुष्प, मन्त्र तथा अन्न आदि समस्त उपचारों से पूजित भगवान् सोम को मैं नमस्कार करता हूँ।[1]

---

1. **राम उवाच**

नमामि शंभुं पुरुषं पुराणं, नमामि सर्वज्ञमपारभावम्।
नमामि रुद्रं प्रभुमक्षयं तं, नमामि शर्वं शिरसा नमामि।।
नमामि देवं परमव्ययं तमुमापतिं लोकगुरुं नमामि।
नमामि दारिद्र्यविदारणं तं, नमामि रोगापहरं नमामि।।
नमामि कल्याणमचिन्त्यरूपं, नमामि विश्वोद्भवबीजरूपम्।
नमामि विश्वस्थितिकारणं तं, नमामि संहारकरं नमामि।।
नमामि गौरीप्रियमव्ययं तं, नमामि नित्यं क्षरमक्षरं तम्।
नमामि चिद्रूपममेयभावं, त्रिलोचनं तं शिरसा नमामि।।
नमामि कारुण्यकरं भवस्य, भयंकरं वाऽपि सदा नमामि।
नमामि दातारमभीप्सितानां, नमामि सोमेशमुमेशमादौ।।
नमामि वेदत्रयलोचनं तं, नमामि मूर्तित्रयवर्जितं तम्।
नमामि पुण्यं सदसद्व्यतीतं, नमामि तं पापहरं नमामि।।
नमामि विश्वस्य हिते रतं तं, नमामि रूपाणि बहूनि धत्ते।
यो विश्वगोप्ता सदसत्प्रणेता, नमामि तं विश्वपतिं नमामि।।
यज्ञेश्वरं संप्रति हव्यकव्यं, तथा गतिं लोकसदाशिवो यः।
आराधितो यश्च ददाति सर्वं, नमामि दानप्रियमिष्टदेवम्।।
नमामि सोमेश्वरमस्वतन्त्रमुमापतिं तं विजयं नमामि।
नमामि विघ्नेश्वरनन्दिनाथं, पुत्रप्रियं तं शिरसा नमामि।।
नमामि देवं भवदुःखशोकविनाशनं चन्द्रधरं नमामि।
नमामि गङ्गाधरमीशमीड्यमुमाधवं देववरं नमामि।।
नमाम्यजादीशपुरंदरादिसुरासुरैरर्चितपादपद्मम्।
नमामि देवीमुखवादनानामीक्षार्थमक्षित्रितयं य ऐच्छत्।।
पञ्चामृतैर्गन्धसुधूपदीपैर्विचित्रपुष्पैर्विविधैश्च मन्त्रैः।
अन्नप्रकारैः सकलोपचारैः, संपूजितं सोममहं नमामि।। (ब्रह्मपुराण 123/195-206)

तदनन्तर भगवान् शंकर ने प्रकट होकर श्रीराम और लक्ष्मण से कहा–'तुम्हारा कल्याण हो, वर माँगो।'

श्रीराम बोले–सुरश्रेष्ठ! महेश्वर! जो लोग इस स्तोत्र के द्वारा भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति करें, उनके सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो जायँ। शम्भो! जिनके पितर नरक के समुद्र में डूबे हों, उनके वे पितर यहाँ पिण्ड आदि देने से पवित्र हो स्वर्गलोक में चले जायँ। जन्मभर में कमाये हुए मानसिक, वाचिक और शरीरिक पाप यहाँ स्नान करनेमात्र से तत्काल नष्ट हो जायँ। जो लोग यहाँ याचकों को भक्तिपूर्वक थोड़ा भी दान दें, वह सब अक्षय होकर दाताओं के लिये उत्तम फल देनेवाला हो।

यह सुनकर शंकरजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने 'एवमस्तु' कहकर श्रीरामचन्द्र की बात का अनुमोदन किया। सुरश्रेष्ठ भगवान् शिव के अन्तर्धान हो जाने पर श्रीराम अपने अनुगामियों के साथ धीरे–धीरे उस प्रदेश में गये, जहाँ से गोदावरी नदी प्रकट हुई है। तब से वह तीर्थ श्रीरामतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जहाँ लक्ष्मण ने स्नान और शंकर का पूजन किया, वह लक्ष्मणतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जहाँ सीता ने स्नानादि किया, वह सीतातीर्थ के नाम से प्रचलित हुआ। सीतातीर्थ नाना प्रकार की समस्त पापराशि को निर्मूल करने में समर्थ है।(ब्रह्मपुराण अध्याय 123)

अन्य प्रमुख प्रसंग जिसमें भगवान् राम ने शिव की अर्चना की थी रामेश्वर लिंग स्थापना का है। रावणविजय के उपरान्त सेतु को तोड़ने के बाद वेलावन(वर्तमान रामेश्वरक्षेत्र) में पहुँचकर श्रीरामचन्द्रजी ने श्रीरामेश्वर के नाम से देवाधिदेव महादेवजी की स्थापना की तथा उनका विधिवत् पूजन किया।

पूजन से प्रसन्न हो भगवान् रुद्र बोले– रघुनन्दन! मैं इस समय यहाँ साक्षात् रूप से विराजमान हूँ। जबतक यह संसार, यह पृथ्वी और यह आपका सेतु कायम रहेगा, तबतक मैं भी यहाँ स्थिरतापूर्वक निवास करूँगा।

श्रीरामने कहा–भक्तों को अभय करनेवाले देवदेवेश्वर! आपको नमस्कार है। दक्ष–यज्ञ का विध्वंस करनेवाले गौरीपते! आपको नमस्कार है। आप ही शर्व[1], रुद्र[2], भव[3] और वरद[4] आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। आपको नमस्कार है। आप पशुओं(जीवों) के स्वामी, नित्य, उग्रस्वरूप तथा जटाजूट धारण करनेवाले हैं, आपको नमस्कार है। आप ही महादेव, भीम[5] और त्र्यम्बक(त्रिनेत्रधारी) कहलाते हैं, आपको नमस्कार है। प्रजापालक, सबके ईश्वर, भग देवता के नेत्र फोड़नेवाले तथा अन्धकासुर का वध करनेवाले भी आप ही हैं; आपको नमस्कार है। आप नीलकण्ठ, भीम, वेधा(विधाता), ब्रह्माजी के द्वारा स्तुत, कुमार कार्तिकेय के शत्रु का विनाश करनेवाले, कुमार को जन्म देनेवाले, विलोहित[6], धूम्र[7], शिव[8], क्रथन[9], नीलशिखण्ड[10], शूली(त्रिशूलधारी), दिव्यशायी[11], उग्र और त्रिनेत्र आदि नामों से

1. प्रलय–काल में संसार का संहार करनेवाले। 2. जगत् को रुलानेवाले। 3. संसार की उत्पत्ति के कारण। 4. वर देनेवाले। 5. भयंकर रूप धारण करनेवाले। 6. लाल रंगवाले। 7. धुएँ के समान रंगवाले। 8. कल्याणस्वरूप। 9. मारनेवाले। 10. नीले रंग का जटाजूट धारण करनेवाले। 11. दिव्यरूप से शयन करनेवाले।

प्रसिद्ध हैं। सोना और धन आपका वीर्य है। आपका स्वरूप किसी के चिन्तन में नहीं आ सकता। आप देवी पार्वती के स्वामी हैं। सम्पूर्ण देवता आपकी स्तुति करते हैं। आप शरण लेने योग्य, कामना करने योग्य और सद्योजात[1] नाम से प्रसिद्ध हैं, आपको नमस्कार है। आपकी ध्वजा में वृषभ का चिन्ह है। आप मुण्डित भी हैं और जटाधारी भी। आप ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करनेवाले, तपस्वी, शान्त, ब्राह्मणभक्त, जयस्वरूप, विश्व के आत्मा, संसार की सृष्टि करनेवाले तथा सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं; आपको नमस्कार है। आप दिव्यस्वरूप, शरणागत का कष्ट दूर करनेवाले, भक्तों पर सदा ही दया रखनेवाले तथा विश्व के तेज और मन में व्याप्त रहनेवाले हैं; आपको बारम्बार नमस्कार है।[2]

इस प्रकार स्तुति करने पर देवाधिदेव महादेवजी ने अपने सामने खड़े हुए श्रीरामचन्द्रजी से कहा – 'रघुनन्दन! आपका कल्याण हो। कमलनयन परमेश्वर! आप देवताओं के भी आराध्यदेव और सनातन पुरुष हैं। नररूप में छिपे हुए साक्षात् नारायण हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये ही आपने अवतार ग्रहण किया था, सो अब इस अवतार का सारा कार्य आपने पूर्ण कर दिया है।

'आपके बनाये हुए मेरे इस स्थान पर समुद्र के समीप आकर जो मनुष्य मेरा दर्शन करेंगे, वे यदि महापापी होंगे तो भी उनके सारे पाप नष्ट हो जायँगे। ब्रह्महत्या आदि जो कोई भी घोर पाप हैं, वे मेरे दर्शनमात्र से नष्ट हो जाते हैं – इसमें अन्यथा विचार करने की आवश्यकता नहीं है।'[3]

(संक्षिप्त पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड अ. 35)

---

1. भक्तों की प्रार्थना से तत्काल प्रकट होनेवाले।

2. **नमस्ते देवदेवेश भक्तानामभयंकर। गौरीकान्त नमस्तुभ्यं दक्षयज्ञविनाशन।।**
नमः शर्वाय रुद्राय भवाय वरदाय च। पशूनां पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने।।
महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय विशाम्पते। ईशानाय भगघ्नाय नमोऽस्त्वन्धकघातिने।।
नीलग्रीवाय भीमाय वेधसे वेधसा स्तुत। कुमारशत्रुनिघ्नाय कुमारजननाय च।।
विलोहिताय धूम्राय शिवाय क्रथनाय च। नित्यं नीलशिखण्डाय शूलिने दिव्यशायिने।।
उग्राय च त्रिनेत्राय हिरण्यवसुरेतसे। अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च।।
अभिगम्याय काम्याय सद्योजाताय वै नमः। वृषध्वजाय मुण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणे।।
तप्यमानाय शान्ताय ब्रह्मण्याय जयाय च। विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते।।
नमो नमस्ते दिव्याय प्रपन्नार्त्तिहराय च। भक्तानुकम्पिने नित्यं विश्वतेजोमनोगते।।
(35/139 – 147)

उपर्युक्त स्तुति वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई द्वारा प्रकाशित पद्मपुराण की प्रति में शब्दों के थोड़े अन्तर के साथ (अ. 38/137 – 145 में भी) पायी जाती है।

3. **इह त्वया कृते स्थाने मदीये रघुनन्दन। आगत्य मानवा राम पश्येयुरिह सागरे।।**
महापातकयुक्ता ये तेषां पापं विनङ्क्ष्यति। ब्रह्मवध्यादि पापानि दुष्टानि यानि कानिचित्।।
दर्शनादेव नश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा। (35/152 – 153)

यह श्लोक वेंकटेश्वर प्रेस की प्रति में थोड़े से अन्तर के साथ (अ. 38/149 – 151 में) पाया जाता है।

रामेश्वर लिंग के माहात्म्य का वर्णन स्कंदपुराण (ब्राह्मखण्ड, सेतुमाहात्म्य अध्याय 43) में इस प्रकार किया गया है। जो प्रातःकाल उठकर तीन बार रामनाथ (रामेश्वर) शब्द का उच्चारण करता है, उसका पहले दिन का पाप तत्काल नष्ट हो जाता है। 'रामनाथ! महादेव! करुणानिधे! सदा मेरी रक्षा कीजिये।' इस प्रकार जो सदा उच्चारण करता है, वह कलियुग से पीड़ित नहीं होता।

रामनाथ महादेव मां रक्ष करुणानिधे।
इति यः सततं ब्रूयात् कलिनासौ बाध्यते।। (स्क. पु. ब्रा. से. मा. 43/71)

'रामनाथ! जगन्नाथ! धूर्जटे! नीललोहित!' जो इस प्रकार सदा बोलता है, उसे माया नहीं सताती। 'नीलकण्ठ! महादेव! रामेश्वर! सदाशिव!' सदा ऐसा बोलनेवाला प्राणी कभी काम से कष्ट नहीं पाता। 'हे रामेश्वर! हे यमराज के शत्रु! हे कालकूट विष का भक्षण करनेवाले शिव!' प्रतिदिन इस प्रकार उच्चारण करनेवाला पुरुष कभी क्रोध से पीड़ित नहीं होता।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक त्रिशूलधारी भगवान् रामेश्वर के स्नान के समय में रुद्राध्याय, चमक, पुरुषसूक्त, त्रिसुपर्ण, पञ्चशान्ति तथा पावमानी आदि ऋचाओं को प्रेमपूर्वक जपता है, वह कभी नरक का कष्ट नहीं भोगता। जो रामेश्वर महालिंग को गाय के दूध से स्नान कराता है, वह अपनी इक्कीस पीढ़ियों का उद्धार करके शिवलोक में पूजित होता है। दही से स्नान करानेवाला पुरुष सब पापों से छूटकर भगवान् विष्णु के लोक में प्रतिष्ठित होता है। रामेश्वर शिव को नारियल के जल से कराया हुआ स्नान ब्रह्महत्या आदि पापों का नाशक बताया गया है। वस्त्र से छाने हुए शुद्ध जल से रामेश्वर महादेव को स्नान करानेवाला वरुणलोक में जाता है। पुष्पों के सुगन्ध से वासित जल के द्वारा दयानिधान रामेश्वर महालिंग को स्नान करानेवाला मनुष्य शिवलोक में पूजित होता है।

रामेश्वर का पूजन, वन्दन, स्मरण, श्रवण और दर्शन कर लेने पर कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रह जाती। जो लाये हुए गंगाजल के द्वारा रामेश्वर लिंग को स्नान कराता है, वह शिवजी के लिये भी आदरणीय हो जाता है। जबतक मृत्यु नहीं आती, जबतक बुढ़ापा का आक्रमण नहीं होता और जबतक इन्द्रियाँ शिथिल नहीं हो जातीं; तभीतक मोक्ष चाहनेवाले मनुष्यों को सदैव रामेश्वर का वन्दन, पूजन, चिन्तन तथा स्तवन कर लेना चाहिये। रामेश्वर का जो भक्तिपूर्वक सदा भजन करता है वह इस भूतल पर सदा सुखी रहता है और अन्त में मोक्ष को प्राप्त होता है।

(उपर्युक्त कथाएँ गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त पद्मपुराण, संक्षिप्त मार्कण्डेयब्रह्मपुराणांक तथा स्कंदपुराणांक से ली गयी हैं।)

❀❀❀❀❀❀